# नात शारीफ

वह सुनहरी जालियों की शबे गम याद आई।
मैं खाुशी से झूम उट्ठा मेरी रूह मुसकारई।
सरे अर्श थी गवारा इसे कब तेरी जुदाई।
न कली की आंखें झपकी न गुलों को नींद आई।
मेरे आक़ा कमली वाले यह कर्म है मुझ पे तेरा।
मैं जिधार गया अकेला मेरे साथ थी खुदाई।
मुझे जा भी कुछ मिलेगा वह मिलेगा उन के दर से।
कोई और क्या भरेगा मेरा कासए गदाई।
जो अभी मैं कुछ भी चाहूं तो जहां का रूख बदल दूं।
मैं गुलामे मुसतफा हूं मेरे साथ है खुदाई।
बड़ा बदनसीब हूं मैं वहां जा के लोट आया।
दरे मुसतफा पे जाके मुझे मोत भी न आई।
वह काली कमली वाले वह अरब के रहने वाले।
जहां चल के रूक गये थे वहीं रूक गई खुदाई।

# शाने कलामुल्लाह शरीफ

ए मोमिना खुदा रा कुंआन के बोल बोलों।
कुंआन एक मुकम्मल फरमान है खुदा का।
कुंआन एक मुदल्लल अहसान है खुदा का।
कुंआन एक मुफस्सल फैज़ान है खुदा का।
कुंआन के जवाहर दामन में अपने ले लो।
ए मोमिना खुदा रा कुंआन के बोल बोलो।
कुंआन ही ने की है भटकों की रहनुमाई।
कुंआन ही ने हम को राहे खुदा बताई।
कुंआन ही से हम ने राहे नजात पाई।
कुंआन की आयतों को तुम क़ल्ब में समोलो।
ए मोमिना खुदा रा कुंआन के बोल बोलो।
कुंआन है खज़ाना, कुंआन रोशनी है।
वह कौन शे है जिस की कुंआन में कमी है।
दोनो जहां की दोलत कुंआन में भरी है।
जिस चीज़ की तलब है कुंआन के बाब खोला।
ए मोमिना खुदा रा कुंआन के बोल बोलो।
कुंआन की मनज़िलों में फिरदोस के नज़ारे।
कुंआन की वादियों में शीर व शकर के धारे।
कुंआन की आयतों में अहसान के सितारे।
कुंआन की हर नसीहत कांटे में दिल के तोलो।
दीने मुहम्मदी का उनवान कह रहा है।
यानी कि तुम से रब का फरमान कह रहा है।
यहबात कितनी अच्छी कुंआन कह रहा है।
बन जाये चाहे जां पर लेकिन न झूट बोलो।
हमसाबेटा बेटी मां बाप जन व शोहर।
कुंआन की वुस्अतों में सब के लिये है गोहर।
कुंआन की आयतों में इल्म व अमल के गोहर।
कुंआन के मख्जनत से जो चीज चाहो ले लो।

# शाने मुहम्मद

## सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लम

ताज़ीम की है जिस ने मुहम्मद के नाम की।

खालिक़ ने उस पे आतिशे दाज़ख हराम की।

भीजूंगा नजर उस शहे आली मकाम की।

डाली सजा रहा हूं दरूद व सलाम की।

दीदारेहक़ था खास मुहम्मद के वासते।

दी ए कलीम तुझ को इजाज़त कलाम की।

भेजा कभी खुदा ने न पैग़ाम बे सलाम।

क्या शान है रसूल अलैयहिस्सलाम की।

तेरे मुक़ाम का तो खुदा ही को इल्म है।

जन्नत तो है जगह तेरे अदना गुलाम की।

# शम्मे ईमान

छुपा कर दीने अहमद की कफन में शान लाया हूं।

फरिश्तो ! करक्के कंदा क़ल्ब पे ईमान लाया हूं।

खुली आंखों हैं उन में दीद का अरमान

अनंधेरा घर सुना था शम्मअे ईमान लाया हूं।

**लहद में रोशनी के वासते ईमान लाया हूं।**

मेरी नेकी मेरे रूख से अयां है देख ले रिज़्वां।

नमाज़ों का असर ज़ो फशां है देख ले रिज़्वां।

रिज़्वां।गर रोक लेने का गुमां है देख ले रिज़्वां।

मेरे माथे पे सजदे का निशां है देख ले रिज़्वां।

**मैं अपने जन्नती होने यह पहचान लाया हूं।**

इबादत करके जिस ने दिल को तरसाया है दुन्या से।

ज़ख़ीरा साथ भी ले करके कुछ आया है दुन्या से।

P.T.O.

दिखा दूंगा बता दूंगा जो कुछ पिया है दुन्या से।
खुदा जब मुझ से पूछेगा क्या लाया है दुन्या से।

**तो कह दूंगा तेरे दीदार का अरमान लाया हूं।**

कयामत में नजर आया कयामत खेज़ जब मंज़र।
हर एक इनसान की नेकी बदी का खुल गया जाहर।
लरज़ कर खोफे इस्यां से नादिम हुये खुश्तर।
मुझे भी बख्शा दे अपने कर्म से दावरे महशर।

**मैं दुन्या में तेरे महबूब पर ईमान लाया हूं।**

# नात शरीफ

मुस्तफा शाने रहमत पे लाखों सलाम।
शम्मे बज़्मे हिदायत पु लाखों सलाम।
उन की पाकीज़ा सूरत पे लाखों सलाम।
उन की पाकीज़ा सीरत पे लाखों सलाम।
जिन को मेराज में हक़ की कुरबत मिली।
सारे नबयों की जिन को इमामत मिली।
और शिफाअत की जिन को इजाज़त मिली।
और खैरुल उमम जिन को उम्मत मिली।
मेरे आक़ा पे रूतबा किसी का नहीं।
ऐसी शाने रिसालत पे लाखों सलाम।
जब हवाज़न में फ़ख़रे रूसुल घिर गया।
सेंकड़ों में अकेला डटा रह गया।
तीर व पत्थर जब उन पे बरसने लगा।
उस जरी ने ललकार कर तब कहा।

P.T.O.

उस नबी(स.) की नबूव्वत पे लाखों सलाम।
मुसतफा शाने रहमत पे लाखों सलाम।
बहरे तब्लीग़ हक़ जब के ताइफ गये।
मिल के कुफ्फार पत्थर लगे मारने।
खून क पशे मुबारक पे लवे जमे।
जिन की चोटों से दन्दां उखड़ कर गिरे।
उन के हक़ में दुआ आप (स.) करने लगे।
बोले ताइफ सदा तो सलामत रहे।
शायद औलाद तेरी मसलमां बने।
इस क़दर रहम व राफत पे लाखों सलाम।
जिन के घरों में महीनों न चूलल्हा जला।
मरते दम तक जिन के घर में दीये तक न था।
उन की दादो दहिश का कहूं हाल क्या।
सीम व ज़र के दीये जिस ने दरया बहा।
उस सखी की सखावत पे लाखों सलाम।
मुसतफा शाने रहमत पे लाखों सलाम।

# नात शरीफ

तड़प उठता हूं जब ताइफ का मंज़र याद आता है।
के ज़ख्मों से भरा जिस्मे पयम्बर याद आता है।
रसूलुल्लाह पर लोगों ने पत्थर इस क़दर मारे।
लहू बहने लगा ज़ख्मी मुहम्मद (स.) हो गये सारे।
वह पत्थर मारते थे आप (स.) जिस जानिब गुज़रते थे।
मुहम्मद मुसतफा फिर भी दुआये खैर करते थे।
हदलिखनवल पे आ पहुचे खसतये दिल गमगीं।
वहां चशमा पे आकर जख्म धोये पट्टिया बाधीं।
ये हालत देखी हज़रत की फरिश्तों ने कहा आ कर।
कहो तो पीस दें इस कोम को, कोहों से टकारा कर।
कहो तो ग़र्क़ कर दें दन को हम फिरओन की तरह।
कहो तो यकसां कर दें यूनान की तरह।
यह फरमाया , नहीं आया हूं मैं क़हरो ग़ज़ब बन कर।
मैं आया हूं जहां में रहमतुल लिलआमीं बन कर।
यह फरमा कर नबी (स.) ने हाथ उठा कर यह दुआ मांगी।
खुदा का फज़्ल मांगा और तसलीमो रज़ा मांगी।

# तब्लीग़ी नज़म

मुसलमानो! मुबारक हो तुम्हें यह काम तब्लीग़ी।
खुशी से नोश फरमालो यह अब तुम जाम तब्लीग़ी।
मुजाहिद खित्तये मेवात के क्यों पड़ गये ढीले।
जहां में इनक़िलाब आया मचा कोहराम तब्लीग़ी।
मुहम्मद मुसतफा ने कामे नबुव्वत हम को सोंपा है।
है लाज़िम उम्मते मरहूम पर यह काम तब्लीग़ी।
यह वह गुलशन है ए लोगो जो हर मौसम में फलता है।
निकल कर देखो तब्लीग़ में अनजाम तब्लीग़ी।
ज़हे क़िसमत के हम जो उम्मते मरहूम कहलाये।
हमारा काम तब्लीग़ी , हमारा नाम तब्लीग़ी।
पयम्बर ने बशारत दी है यह तब्लीग़ वालों को।
करेंगे जन्नतुल फिरदोस में आराम तब्लीग़ी।
मगर फरमाने रब्बी से सदा डरना तू ए राहिल।
हुये हैं "त-अ-मुरूनन्ना-स" से यह काम तब्लीग़ी।

# हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैयहि व सल्लम की शान में

**मुहम्मद न होते तो कुछ भी न होता।**

अदा आज मुस्लिम की है वालिहाना। खिंचा है निगाहों में मनज़र सुहाना।
अनोखी कहानी अनोखा फसाना। सुनाऊ निराला निराला तराना।

**मुहम्मद न होते तो कुछ भी न होता।**

लुभाती न दिल मेरा कोयल की कूकू। न बसती निगाहों में फूलों की खुशबू।
चमन में न लाला सदफ में न लूलू। न दिलकश मनाज़िर यह होते लब जो।

**मुहम्मद न होते तो कुछ भी न होता।**

न दुन्या में हर सिम्त हाता उजाला। न खुरशीद को मिलता किरनों का भाला।
न दरया न गुलशन न लूलू न लाला। न मनज़र सुहाना न मनज़र निराला।

**मुहम्मद न होते तो कुछ भी न होता।**

न बहते समनदर में पानी के धारे। न ओज फलक पर चमकते सितारे।
न गुलशन न गुलशान के रंगीं नज़ारे। न मस्जिद न मस्जिद के ऊंचे मिनारे।

**मुहम्मद न होते तो कुछ भी न होता।**

न मौला की रहमत का लुटता खजीना। न रमज़ान का यह मुबारक महीना।
किनारे न उम्मत का लुटता सफीना। न तामीर काबा न मक्का मदीना।

**मुहम्मद न होते तो कुछ भी न होता।**

न अबूबक्र होते न उसमान होते। न फ़ारूक व हैद्र सजी शान होते।
न मेहफिल के साज़ और सामान होते। न ईमान ला कर मुसलमान होते।

**मुहम्मद न होते तो कुछ भी न होता।**